IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

क्ण्स्मक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में परिवार नियोजन अभिवृत्ति का अध्ययन

शोधकर्त्री

प्रियंका सोनी

एम.एड. छात्रा)

सारांश– परिवार नियोजन सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत आता है। जन्म नियंत्रण की योजना प्रावधान और उपयोग को परिवार नियोजन कहा जाता है। परिवार नियोजन को मुख्यतः विश्व की जनसंख्या नियंत्रित करने के एक साधन के रूप में देखा गया है। लेकिन वैश्विक स्तर पर गिरती हुई जनसंख्या दरों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि परविार नियोजन को केवल जनसंख्या नियंत्रण प्रणाली के रूप में न देखते हुए उकसे अन्य प्रभावों को मान्यता दी जाए। लंदन में वर्ष 2010 में आयोजित परिवार नियोजन संगोष्ठी में पुनः स्थिति निर्णारण दृष्टि को वैश्विक मानत्रित पर स्थापित किया गया। षोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुए षीर्षक **क्ण्स्मक** द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में परिवार नियोजन अभिवृत्ति का अध्ययन करने के अन्तर्गत षोधकार्य किया। स्वेच्छा से परिवार नियोजन अपनाने से मातृ एवं बाल मृत्यु संख्या भी कम की जा सकती है। इस शोध कार्य को क्ण्स्ण्म्कण स्तर में विज्ञान संकाय में अध्यनरत् 200 विद्यार्थियों पर किया गया तथा शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि क्ण्स्ण्म्कण स्तर शहर व ग्रामीण छात्रों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1. प्रस्तावना– जब पैरवी के पीछे सशक्त शोध और प्रमाण सबूत होते है, तब इसके कहीं अधिक बेहतर परिणाम होते है और यह नीति विकास, कुशल सेवा प्रावधानीकरण और कार्यक्रमों एवं हस्तक्षेपों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सार्थक योगदान देती है। हमारी रणनीति के हिस्से के रूप में ''महिला सशक्तिकरण और मानव अधिकारों के ढाँचे के भीतर परिवार नियोजन का पुनः स्थिति–निर्धारण करने के

लिए पी.एफ.आई. ने परिवार नियोजन में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अनुभवों की एक व्यवस्थित समीक्षा की है। परिवार नियोजन के महत्व पर सार्वजनिक बातचीत बढ़ाने और सफल परिवार नियोजन की पहलों को बड़े पैमाने पर ले जाने के लिए सशक्त पैरवी के समर्थन में प्रमाण उपलब्ध कराता है। यह अलग अलग कारगर रणनीतियों की श्रृंखला को चिन्हित करता है, जो महिलाओं, पुरूषों और बच्चों के स्वास्थ्य और अधिकारों को कायम रखने के एक साधन के रूप में परिवार नियोजन के पुनः स्थिति निर्धारण में सहायक होगा।

यह समीक्षा डेविड और ल्यूसिले फाउंडेशन के समर्थन के बिना संभव नहीं हो सकती थी। हम विशेष रूप से श्री लेस्टर कुष्टिन्हो कार्यक्रम अधिकारी और फाउंडेशन के नई दिल्ली कार्यालय में जनसंख्या और प्रजनन कार्यक्रम के कंट्री एडवाइजर श्री वी.एस. चन्द्रशेखर का धन्यवाद करना चाहेंगें।

परिवार नियोजन– परिवार नियोजन से तात्पर्य एक ऐसी योजना से है, जिसमें परिवार की आय माता के स्वास्थ्य बच्चों के समुचित पालन पोषण तथा शिक्षा को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त समय पर और एक आदर्श संख्या में सन्तनों को जन्म दिया जाए।

शाब्दिक रूप से परिवार नियोजन का अर्थ साधारणतया दो या तीन सन्तानों को जन्म देकर परिवार के आकार को नियोजित रूप से सीमित रखना, समझा जाता है।

2. **शोध के उद्देश्य**– क्ण्स्ण्म्कण द्विवर्षीय स्तर पर परिवार नियोजन अभिवृत्ति की जागरूकता के प्रति विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

3. **शोध सीमांकन**–

1. शोध कार्य क्ण्स्ण्म्कण द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

2. शोध अध्ययन में केवल क्ण्स्ण्म्कण द्विवर्षीय के छात्रों को ही लिया गया है।

4. शोध विधि– प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5. अध्ययन के चर– प्रस्तुत अध्ययन में चर के रूप में केवल परिवार नियोजन को ही लिया गया है।

6. शोध न्यादर्श– इस शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा विज्ञान संकाय के क्ण्स्ण्म्कण के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

7. शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध हेतु स्ंजम डण्।ण् भ्ंपदह और क्तण् लैंअपत ैपदही द्वारा निर्मित परिवार नियोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण में शोध दो प्रकार से प्रयोग में लाये जाते है।

1. मनकीकृत

2. स्वनिर्मित उपकरण

शोधकर्त्री ने परिवार नियोजन अभिवृत्ति को मापने के लिए एक मानकीकृत का प्रयोग किया है।

परिवार नियोजन अभिवृत्ति– स्ंजम डण्।ण भंपउ और क्तण् लैंअपत`पदही द्वारा निर्मित यह प्रमापनी परिवार नियोजन अभिवृत्ति व छात्रों के प्रति सामाजिक ज्ञान की विशिष्टता बढ़ाने के लिए और अधिक व्यापक और वैद्य तरीके से परिवार नियोजन की अभिवृत्ति के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग की जा सकती है। भारतीय विद्यार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने की दृष्टि से क्तण् लैंअपत`पदही ने यह परिवार नियोजन प्रमापनी विकसित और मानकीकृत की।

प्रमापनी की विश्वसनीयता– डॉ. यशवीर सिंह द्वारा ब्वमपिबपमदज निर्धारित किय गए है।

स्पीयरमेन ब्राउन कॉरफेंसी फॉर्मूला– 0.85

वैद्यता– यह निम्न दो विधि से ज्ञात की गयी–

1- Index of reliability-0-02

2- Know samples

8. सांख्यिकी की प्रविधियां– शोध कार्य में विश्वसनीयता परिणाम निश्चित करने हेतु उच्च व विश्वसनीयता सांख्यिकी प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा ' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

9. आँकड़ों का सारणीयन एवं विश्वलेषण–

तालिका 1– डीएल.एड प्रशिक्षणार्थियों में परिवार नियोजन संबंधी जागरूकता/अभिवृत्ति के आँकड़ों का अध्ययन–

क्र.सं.	छात्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	Z-score	सार्थक अंतर
1.	ग्रामीण छात्र	100	94.84	4.842	4.17	कोई सार्थक अंतर नहीं
2.	शहरी छात्र	100	108	7.929		

क्त्र छ1. छ2.2 त्र 100100.2 त्र 198

उपर्युक्त परिणामों के अनुसार िअनुपात का मान गणना द्वारा 4.17 प्राप्त हुआ है। िातालिका के अनुसार क्त्र 198 पर िका आवश्यक मान 1.67 है। यहां चूंकि िके आवश्यक मान से िका गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है। इसलिए 0.5 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना क्ण्ण्म्कण् स्तर के ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं है। निरस्त करते हुए कह सकते है कि शहरी विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान से ग्रामीण विद्यालयों की छात्रों का मध्यमान अधिक है और दोनों मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

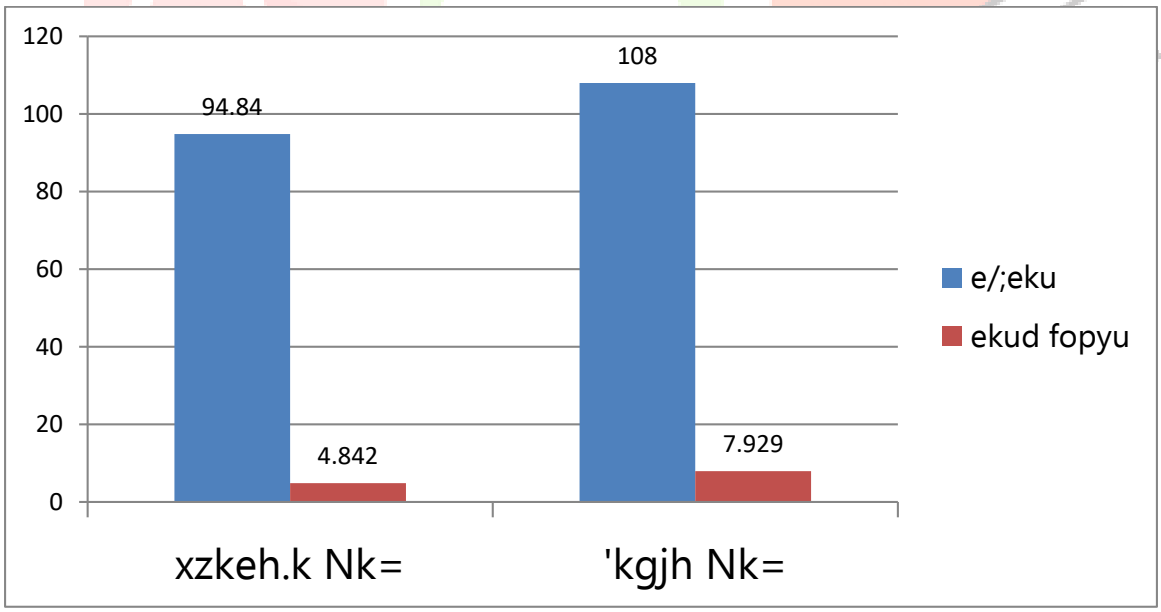

आकृति–1 क्ण्ण्म्कण् स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के परिवार नियोजन का ग्राफीय अध्ययन।

आकृति से स्पष्ट होता है

शहरी छात्रों (100) का परिवार नियोजन की अभिवृत्ति के परीक्षण प्राप्तांकों का मध्यमान 108 एवं मानक विचलन 7.92 प्राप्त हुआ। ग्रामीण छात्रों के (100) परिवार नियोजन की अभिवृत्ति का परीक्षण मध्यमान 94. 84 तथा मानक विचलन 4.84 प्राप्त हुआ।

10. शोध निष्कर्ष– अतः स्पष्ट होता है कि शहरी छात्रों की परिवार नियोजन की अभिवृत्ति ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक है।

शहरी छात्रों में परिवार नियोजन अभिवृत्ति ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक है।

शहरी छात्रों में परिवार नियोजन अभिवृत्ति ग्रामीण छात्रों से सार्थक रूप से अधिक होने के कारण सम्भवतः योग्य प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य विद्यार्थियों पर आर्थिक बोझ न होना तथा विद्यालय में सामाजिक वातावरण का होना महत्वपूर्ण कारण प्रतीत होता है।

11. सुझाव– अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर परिवार नियोजन के संदभ्र में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गए है–

1. यह परिणाम ग्रामीण छात्रों को अपने परिवार नियोजन को सुधारने हेतु संकेत प्रदान करता है।

2. पाठ्यचर्या समय–सारणी, अध्यापकगण, शिक्षण युक्तियां, साथी समूह, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय और वाचनालय आदि अनेक ऐसे पक्ष व क्रियाकलाप है, जो छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते है तथा जिनके फलस्वरूप परिवर्तित हो सकती है। अतः इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, सुरेष (2009) "षिक्षा मनोविज्ञान", मेरठ आर.लाल बुक डिपो, 376.

2. डॉ०षषिकला सरीन एवं डॉ० अंजलि सरीन (2007) : शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ. आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.

3. पाठक, पी.डी. (2008) : " आगरा षिक्षा मनोविज्ञान" अग्रवाल पब्लिकेषन,

4. राय पारसनाथ (1995) "अनुसंधान परिचय" आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन,

5. रायजादा बी.एस. (2013) : "षिक्षा में अनुसंधान के आवष्यक तत्व" जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

6. राय,पारसनाथ (1995) : "अनुसंधान परिचय" आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन,

7. शर्मा, आर.ए. (1995) : "षिक्षा अनुसंधान" मेरठ, आर. लाल बुक डिपो,

8. सिंह रामपाल व शर्मा ओ. पी. (2008) "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी " आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर

9. सरीन, डॉ. शषिकला, सरीन डॉ. अंजलि (2004) "शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ" आगरा विनोद पुस्तक मंदिर,